श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री मंगल गीत

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्री मंगल गीत

श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए |
कलितललितवनमाल जय जय देव हरे ॥ 1 ॥

दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए |
मुनिजनमानसहंस जय जय देव हरे ॥ 2 ॥

कालियविषधरगंजन जनरंजन ए |
यदुकुलनलिनदिनेश जय जय देव हरे ॥ 3 ॥

मधुमुरनरकविनाशन गरुडासन ए।
सुरकुलकेलिनिदान जय जय देव हरे ॥ 4 ॥

अमलकमलदललोचन भवमोचन ए |
त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ॥ 5 ॥

जनकसुताकृतभूषण जितदूषण ए |
समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ॥ 6 ॥

अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए |
श्रीमुखचन्द्रचकोर जय जय देव हरे ॥ 7 ॥

तव चरणं प्रणता वयमिति भावय ए |
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ॥ 8 ॥